

॥ तैत्तिरीय ब्राह्मणम् ॥

॥ चतुर्थः प्रश्नः ॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः ॥

ब्रह्मणे ब्राह्मणमालभते। क्षत्राय राजन्यम्। मरुद्ध्यो वैश्यम्।
तपसे शूद्रम्। तमसे तस्करम्। नारकाय वीरहणम्। पाप्मने
क्लीबम्। आक्रयायायोगूम्। कामाय पुंश्चलूम्। अतिक्रुष्टाय
मागधम्॥ १ ॥

गीताय सूतम्। नृत्ताय शैलूषम्। धर्माय सभाचरम्। नर्माय
रेभम्। नरिष्ठायै भीमलम्। हसाय कारिम्। आनन्दाय
स्त्रीषखम्। प्रमुदे कुमारीपुत्रम्। मेधायै रथकारम्। धैर्याय
तक्षाणम्॥ २ ॥

श्रमाय कौलालम्। मायायै कार्मारम्। रूपाय मणिकारम्।
शुभे वपम्। शरव्याया इषुकारम्। हेत्यै धन्वकारम्। कर्मणे
ज्याकारम्। दिष्टाय रज्जुसर्गम्। मृत्यवे मृगयुम्। अन्तकाय
श्वनितम्॥ ३ ॥

सन्धये जारम्। गेहायोपपतिम्। निर्ऋत्यै परिवित्तम्।

आर्त्यै॑ परि॒विवि॒दानम्। अरा॑ध्यै दि॒धिषू॒पतिम्। प॒वित्रा॑य
भि॒षजम्। प्र॒ज्ञाना॑य नक्ष॒त्रदर्श॑म्। निष्कृ॑त्यै पेश॒स्कारी॑म्।
बला॑योप॒दाम्। वर्णा॑यानू॒रुधम्॥४॥

न॒दीभ्यः॑ पौञ्जि॒ष्टम्। ऋ॒क्षीका॑भ्यो नैषा॑दम्। पु॒रुष॒व्याघ्रा॑य
दु॒र्मदम्। प्र॒युञ्ज्य॑ उ॒न्मत्त॑म्। ग॒न्ध॒र्वाप्स॒राभ्यो॑ ब्रा॒त्यम्।
स॒र्पदे॒वज॒नेभ्यो॑ऽप्र॒तिप॑दम्। अवे॑भ्यः कि॒तव॑म्। इ॒र्यता॑या
अकि॑तवम्। पि॒शाचे॒भ्यो बि॑दलका॒रम्। या॒तुधा॑ने॒भ्यः
कण्ट॑कका॒रम्॥५॥

उ॒त्सादे॒भ्यः कु॒ञ्जम्। प्र॒मुदे॑ वाम॒नम्। द्वा॒भ्यः स्ना॒मम्।
स्व॒प्राया॑न्धम्। अध॑र्माय ब॒धिर॑म्। सं॒ज्ञाना॑य स्मर॒कारी॑म्।
प्र॒कामो॑द्यायोप॒सदम्। आ॒शि॒क्षायै॑ प्र॒श्जिन॑म्। उ॒प॒शि॒क्षाया॑
अभि॑प्र॒श्जिन॑म्। म॒र्यादा॑यै प्र॒श्नवि॒वाक॑म्॥६॥

ऋ॒त्यै स्ते॒नहृ॑दयम्। वैर॑हत्याय पि॒शुन॑म्। वि॒वित्त्यै॑ क्ष॒त्तार॑म्।
औप॑द्र॒ष्टाय॑ सङ्ग॒हीता॑रम्। बला॑यानुच॒रम्। भू॒म्ने प॑रिष्कु॒न्दम्।
प्रि॒याय॑ प्रि॒यवा॑दिनम्। अरि॑ष्ट्या अश्व॒साद॑म्। मे॒धाया॑ वासः
पल्पू॑लीम्। प्र॒कामा॑य रजयि॒त्रीम्॥७॥

भा॒यै दा॒र्वाहा॑रम्। प्र॒भाया॑ आग्ने॒न्धम्। नाक॑स्य

पृ॒ष्ठाया॑भिषे॒त्तार॑म्। ब्र॒ध्नस्य॑ वि॒ष्टपा॑य पात्रनिर्णे॒गम्।
 दे॒वलो॒काय॑ पेशि॒तार॑म्। म॒नुष्य॒लो॒काय॑ प्रक॒रित॑ारम्।
 सर्वे॑भ्यो लो॒केभ्य॑ उप॒सेत्तार॑म्। अव॑र्त्यै व॒धायो॑पमन्थि॒तार॑म्।
 सु॒वर्गा॑य लो॒काय॑ भा॒गदु॒घम्। व॒र्षि॑ष्ठाय॒ नाका॑य
 परि॒वेष्टा॑रम्॥८॥

अ॒र्मे॑भ्यो ह॒स्ति॒पम्। ज॒वाया॑श्च॒पम्। पु॒ष्ट्यै गो॒पा॒लम्।
 तेज॑सेऽज॒पा॒लम्। वी॒र्या॑यावि॒पा॒लम्। इ॒रा॑यै की॒नाश॑म्।
 की॒लाला॑य सु॒राका॑रम्। भ॒द्राय॑ गृ॒हप॑म्। श्रेय॑से वि॒त्त॒धम्।
 अ॒ध्य॑क्षा॒यानु॑क्ष॒त्तार॑म्॥९॥

म॒न्यवे॑ऽय॒स्ता॒पम्। क्रो॒धा॑य॒ निस॑रम्। शो॒का॑याभि॒स॒रम्।
 उ॒त्कूल॑वि॒कूला॑भ्या॒न्नि॒स्थि॒नम्। यो॒गा॑य॒ यो॒त्तार॑म्। क्षे॒मा॑य॒
 वि॒मो॒त्तार॑म्। व॒पु॑षे मा॒नस्कृ॑तम्। शी॒ला॑याञ्जनीका॒रम्।
 नि॒र॒ऋ॒त्यै को॑शका॒रीम्। य॒मा॒या॒सूम्॥१०॥

य॒म्यै य॒म॒सूम्। अथ॑र्व॒भ्योऽव॑तो॒काम्। सं॒व॒त्स॒रा॑य॒
 पर्या॑रिणी॑म्। प॒रि॒व॒त्स॒रा॑यावि॒जा॒ताम्। इ॒दा॒व॒त्स॒रा॑याप॒स्क॒द्व॒रीम्।
 इ॒द्व॒त्स॒रा॑या॒ती॒त्वं॒वरी॑म्। व॒त्स॒रा॑य॒ वि॒ज॑र्ज॒राम्। स॒र्व॒न्त्स॒रा॑य॒
 प॒लि॑क्रीम्। व॒ना॑य व॒न॒पम्। अ॒न्यतो॑र॒ण्या॑य॒ दा॒व॒पम्॥११॥

सरो॑भ्यो धै॒वरम्। वेश॑न्ताभ्यो दा॒शम्। उ॒प॒स्थाव॑रीभ्यो
 बै॒न्दम्। न॒ङ्गुला॑भ्यः शौ॒ष्क॒लम्। पा॒र्याय॑ कै॒व॒र्तम्। अ॒वा॒र्याय॑
 मा॒र्गा॒रम्। ती॒र्थेभ्य॑ आ॒न्दम्। विष॑मेभ्यो मै॒ना॒लम्। स्व॒ने॑भ्यः
 पर्ण॑कम्। गुहा॑भ्यः कि॒रा॒तम्। सा॒नु॒भ्यो ज॑म्भकम्। पर्व॑तेभ्यः
 कि॒म्पू॒रुष॑म्॥१२॥

प्र॒ति॒श्रु॒त्का॑या ऋ॒तु॒लम्। घोषा॑य भ॒षम्। अ॒न्ता॑य बहु॒वा॒दि॒नम्।
 अ॒न॒न्ता॑य मू॒कम्। मह॑से वीणा॒वा॒दम्। क्रोशा॑य तू॒ण॒व॒ध्मम्।
 आ॒क्र॒न्दा॑य दु॒न्दु॒भ्याघा॑तम्। अ॒वर॑स्प॒राय॑ शङ्ख॒ध्मम्।
 ऋ॒भु॒भ्यो॑जिनस॒न्धा॒यम्। सा॒ध्ये॒भ्यश्च॑र्म॒ण्णम्॥१३॥

बी॒भ॒त्सा॑यै पौ॒ल्क॒सम्। भू॒त्यै जा॑गर॒णम्। अ॒भू॒त्यै स्व॑प॒नम्।
 तु॒ला॑यै वाणि॒जम्। वर्णा॑य हि॒र॒ण्यका॑रम्। वि॒श्वे॑भ्यो दे॒वेभ्यः॑
 सि॒ध्म॒लम्। प॒श्चा॒द्दोषा॑य ग्ला॒वम्। ऋ॒त्यै ज॑नवा॒दि॒नम्। व्यृ॑द्ध्या
 अ॒प॒ग॒ल्भ॑म्। स॒श॒रा॑य प्र॒च्छि॒दम्॥१४॥

ह॒सा॑य पु॒श्च॒लूमा॑ ल॒भ॒ते। वी॒णा॒वा॒द॒ङ्गण॑कङ्गी॒ताय॑।
 याद॑से शा॒बु॒ल्याम्। न॒र्मा॑य भ॒द्र॒व॒तीम्। तू॒ण॒व॒ध्म॒ङ्गाम॑ण्यं
 पा॒णि॒सङ्घा॑त॒नृ॒त्ताय॑। मोदा॑यानु॒क्रोश॑कम्। आ॒न॒न्दा॑य
 त॒ल॒वम्॥१५॥

अक्षराजाय कितवम्। कृताय सभाविनम्। त्रेताया
 आदिनवदशम्। द्वापराय बहिः सदम्। कलये सभास्थाणुम्।
 दुष्कृताय चरकाचार्यम्। अध्वने ब्रह्मचारिणम्। पिशाचेभ्यः
 सैलगम्। पिपासायै गोव्यच्छम्। निर्ऋत्यै गोघातम्। क्षुधे
 गोविकर्तम्। क्षुत्तृष्णाभ्यान्तम्। यो गां विकृन्तन्तं मांसं
 भिक्षमाण उपतिष्ठते॥१६॥

भूम्यै पीठसर्पिणमा लभते। अग्नयेऽसलम्। वायवे
 चाण्डालम्। अन्तरिक्षाय वःशनर्तिनम्। दिवे खलतिम्।
 सूर्याय हर्यक्षम्। चन्द्रमसे मिर्मिरम्। नक्षत्रेभ्यः किलासम्।
 अह्ने शुक्लं पिङ्गलम्। रात्रियै कृष्णं पिङ्गाक्षम्॥१७॥

वाचे पुरुषमा लभते। प्राणमपानव्याँनमुदानं समानन्तान्
 वायवे। सूर्याय चक्षुरा लभते। मनश्चन्द्रमसे। दिग्भ्यः श्रोत्रम्।
 प्रजापतये पुरुषम्॥१८॥

अथैतानरूपेभ्य आलभते। अतिह्रस्वमतिदीर्घम्।
 अतिकृशमत्यसलम्। अतिशुक्लमतिकृष्णम्। अतिश्लक्ष्ण-
 मतिलोमशम्। अतिकिरिटमतिदन्तुरम्। अतिमिर्मिरमतिमेमिष
 आशायै जामिम्। प्रतीक्षायै कुमारीम्॥१९॥

ब्रह्मणे गी॒ताय॒ श्रमा॑य॒ सन्ध॑ये॒ न॒दीभ्य॑ उत्सा॒देभ्य॑ ऋ॒त्यै॒ भाया॑ अ॒र्मेभ्यो॑ म॒न्यवे॑ य॒म्यै
 दश॑दश॒ सरो॑भ्यो॒ द्वाद॑श॒ प्रति॑श्रु॒त्कायै॑ बीभ॒त्सायै॑ दश॑दश॒ हसा॑य॒ सप्ताक्ष॑रा॒जाय॑ त्रयो॑दश॒
 भू॒म्यै॒ दश॑ वा॒चे षड॑थ॒ नवै॒कान्न॑वि॒ंशतिः॥१९॥

ब्रह्मणे य॒म्यै॒ नव॑दश॥१९॥

ब्रह्मणे कुमा॒रीम्॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः
 प्रपाठकः समाप्तः॥